आज तो मंसूबा देहली बनाती है, देहात नहीं। मैं कहना चाहता हूँ कि हर देहात अपनी अक्ल से अपनी योजना, मंसूबा बनाये तो चाहे वह कमजोर बने या उसमें नुक्स भी रह जायँ, पर उससे देहात की तरक्की होगी। गाँववाले चाहें तो ऊपर से उन्हें सलाह दी जा सकती है। लेकिन उनपर ऊपर से कोई योजना लादी नहीं जानी चाहिए। इस तरह जब देहात अपनी योजना आप करेगा, तब देहात का हाथ जबर बनेगा और सरकार का जेर। फिर ताली बजेगी। आज सरकार का हाथ जबर है, देहात-वाले कुछ करते ही नहीं हैं, इसलिए ताली बजती नहीं। सरकार के पैसे यूँ ही खर्च होते जा रहे हैं। गाँवों के पास कुछ नहीं पहुँच रहा है। इसलिए गाँववालों को उठ खड़े होना चाहिए, अपनी ताकत बनानी चाहिए। फिर सरकार से जो मदद मिलेगी, वह लादी नहीं जायगी, ली जायगी और गाँववाले उसका उपयोग अपनी अक्ल से करेंगे। नतीजा यह होगा कि गाँव में सोचने का माद्दा आयेगा, जो आज नहीं दीखता है। आज उनके हाथ काम करते हैं और दिल काम करता है, लेकिन जब वे अपना मंसूबा आप बनाने लगेंगे तो दिमाग भी काम करने लग जायगा। हाथ, दिमाग और दिल—तीनों के इकट्ठा होने से गाँववाले बहुत अच्छी तरह से काम कर सकेंगे।

भूदान, ग्रामदान; शांति-सेना—ये सारे काम हम इसीलिए चला रहे हैं कि आज लोगों की आत्मशक्ति जाग जाय। आत्मा में जो शक्ति पड़ी है, उसका आपको एहसास हो। गाँव के लोग जब उठ खड़े होंगे और सारे गाँव का सोचने लगेंगे तो आज जो कानून घर में चलता है, वही गाँवभर में लागू होगा। घर में बाप ने एक रुपया कमाया, माँ ने बारह आने कमाये, लड़के ने चार आने कमाये और छोटे लड़के ने कुछ भी नहीं कमाया तो यह नहीं होता है कि जो जितना कमाये, उतना खाये। बाप एक रुपये का खाये, माँ आठ आने का खाये, बड़ा लड़का चार आने का खाये और छोटा लड़का भूखा रहे। बल्कि सबकी कमाई इकट्ठा की जाती है, सबकी मुश्तरका कमाई मानी जाती है और जिसको जितनी भूख है, वह उतना खाता है। वहाँ 'मेरी' कमाई नहीं कहा जाता है, 'हमारी' कहा जाता है। हमारी दो रुपया कमाई है, ऐसा कहा जाता है। जैसे हमने घर में 'मेरी' तोड़ी और हमारी जोड़ी, वैसे ही गाँव में भी 'हमारी' वाली बात चलानी है। जमीन, दौलत, श्रमशक्ति, सब हमारी, गाँव की है, ऐसा समझना चाहिए। घर में 'मेरी' वाली बात नहीं चलती है, इसीलिए सुख और शांति रहती है। आज जिन घरों में 'मेरी' वाली बात दाखिल हो गयी है, वहाँसे शांति मिट गयी है।

भाई-भाई का क्यों नहीं बनता ?

कुछ लोग सवाल पूछते हैं कि जहाँ एक घर में भाई-भाई की नहीं बनती है, वहाँ आप सारे गाँव को इकट्ठा करने की बात करते हैं तो यह कैसे बनेगा ? पूछनेवाले समझते हैं कि हमने ऐसा सवाल पूछा है, जिससे बाबा लाजवाब हो जायँगे। लेकिन मैं जवाब देता हूँ कि घर में भाई-भाई की इसीलिए नहीं बनती है, क्योंकि पहले जहाँ पहले प्रेम था, वहाँ कानून दाखिल हो गया है। कानून में भाई का हक, बहन का हक, बीबी का हक वगैरह चलता है। अगर कानून दखल न देता तो घर में प्रेम ही रहता और एक बात यह है कि जहाँ शख्सी मिलकियत मिट जाती है, वहाँ कानून दखल नहीं देता। फिर वहाँ भाई-भाई का नाता न रहकर मित्र-मित्र का नाता बन जाता है। कानून ने भाइयों को तबाह कर दिया है। दुनिया में सबसे ज्यादा दुश्मनी कौन करते हैं ? (१) दुश्मन (२) भाई-भाई। कौरव पांडव दुश्मनी कर सकते थे, क्योंकि भाई-भाई थे। हिन्दुस्तान, पाकिस्तान दुश्मनी कर सकते हैं, क्योंकि भाई-भाई हैं। इस तरह दुश्मनों की और भाइयों की दुश्मनी चलती है। लेकिन मित्रों की दुश्मनी नहीं हो सकती है। मैं गाँव का मित्र-समाज बनाना चाहता हूँ। वहाँसे कानून हटाना चाहता हूँ। मित्र का नाता सबसे श्रेष्ठ है, सुन्दर है, अद्भुत है। मित्र एक-दूसरे को मदद करते हैं। एक-दूसरे पर कोई हक नहीं मानते हैं, बल्कि अपना हक, फर्ज अदा करते हैं। लेकिन घर में हक की बात चलती है। पत्नी ने पचास दफा आज्ञा मानी, लेकिन एक दफा नहीं मानी तो पतिराज यह बात कतई भूल जाते हैं कि उसने पचास दफा आज्ञा मानी थी। वे तो उतना ही याद रखते हैं कि एक दफा नहीं मानी थी। क्योंकि पति समझता है कि पत्नी पर अपना हक है, इस-लिए एक दफा नहीं मानी तो बड़ा पाप हुआ ! पचास दफा मानी तो पुण्य नहीं हुआ। लेकिन मित्र जिन्दगी में एक दफा मदद करे तो हम उसका उपकार मानते हैं और उस बात को कभी नहीं भूलते। क्योंकि मित्रों में किसीका किसीपर कोई हक नहीं रहता है। मित्रों में जो अन्योन्य उपकार की भावना होती है, उसे हम लाना चाहते हैं और कुनबे में जो हक की बात चलती है, उसे हटाना चाहते हैं। इसलिए भाई-भाई का नहीं बनता है, लेकिन गाँव का बन सकता है। जिन कारणों से भाई भाई का नहीं बनता है, उन कारणों को हम हटाना चाहते हैं। ◆◆◆

प्रश्न : क्या सर्वोदय-पात्र पर आधारित रहने का अर्थ संन्यासी बन जाना नहीं है ?

विनोबाजी : जो नहीं। क्या आपकी फौज के सिपाही संन्यासी होते हैं ? नहीं, तो शान्ति-सैनिक भी संन्यासी कैसे हो सकते हैं ? वे भी तो सिपाही ही हैं। सारा समाज जिस स्तर का है, उसी स्तर के शान्ति-सैनिक हैं, यों समझकर हरएक को उसके लिए मुट्ठीभर देना चाहिए और यों समझकर ही उसे लेना भी चाहिए। इसमें ऊँचे स्तर की अपेक्षा करना गलत है।

अनुक्रम

१. खिलाकर खाना ही इन्सान की इन्सानियत है
रजौली २३ जून '५९ पृष्ठ ७५५
२. हम हक (कानून) को हटाना चाहते हैं
बम्मनवाड़ी १३ सितम्बर '५९ ,, ७५६

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी
www.vinoba.in